श्री वेंकटेश स्तोत्रम्

श्री वेङ्कटेश सुप्रभातम्


गोवर्धनलीला


बन्सीलीला


रासलीला

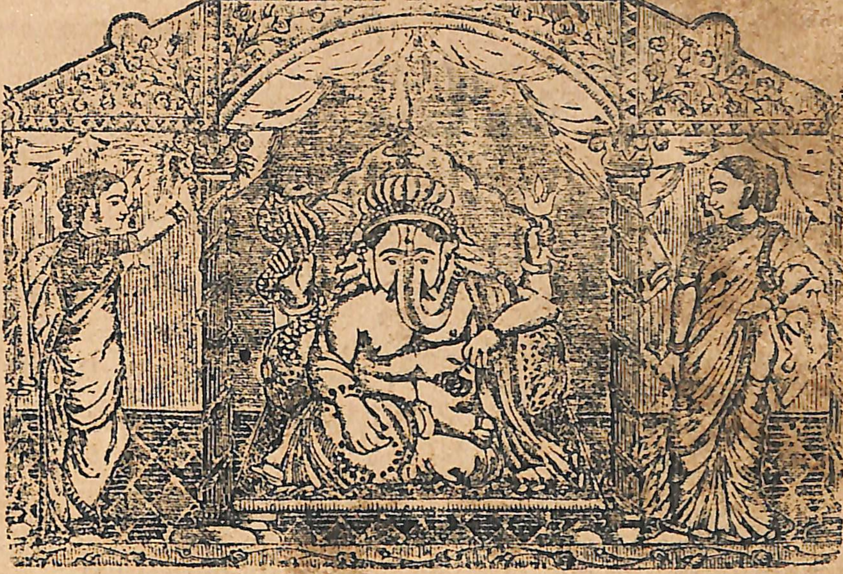

दानलीला


हिंडोलाझुलनलीला.


होरीलीला


मथुरागमनलीला


रघुनाथलीला.







श्रीराममाहात्म्यम् ।

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ॥ सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥ १ ॥ श्रीराम राम रामेति ये जपन्ति च सर्वदा ॥ तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च भवत्येव न संशयः ॥ २ ॥

हरिमाहात्म्यम् ।

विपरीतेषु कालेषु परिक्षीणेषु बन्धुषु ॥ त्राहि मां कृपया कृष्ण शरणागतवत्सल ॥ १॥ कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनंदनाय च ॥ नंदगोपकुमाराय गोविन्दाय नमो नमः ॥ २ ॥

उन्नामप्रदेशान्तरगतआसाखेडाग्रामनिवासी—

दासरामप्रसादकृत

श्रीवेंकटेशसुप्रभातम्.

दोहा—गोपालक गरुडध्वज, लक्ष्मीपति भगवान ॥
उठहु २ त्रैलोक्यकर, मंगल करहु सुजान ॥१॥

कवित्त--सकल जहान प्रतिपालन करन मातु राक्षससमूह मधुकैटभादि गंजनी ॥ क्रीडाकी करनहार विष्णुवक्षस्थलमें सुंदर स्वरूप रतिआदि मदभंजनी ॥ वेंकटेश प्रीतिकी हौ भाजन भनत वेद आश्रित विलोकि निजजनमन रंजनी ॥ जयति २ स्वामिनी अनेकद्युति दामिनी तुम्हारो सुप्रभात होय दारिद निकंदनी ॥ २ ॥

सवैया—चंद्रमुखी सुप्रसन्न सदा चखकी उपमा जलजारुण हारो ॥
इंद्रवधू गिरिजादिक सेवित तो भृकुटी रुख रोज निहारो ॥
हौ करुणा गुणआगरि मातु सदैव हरौ जनको दुख भारो ॥
हे वृषभाद्रि सुनाथ प्रिया सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ ३ ॥
अत्रि प्रभृति सबै ऋषि सत सुपूजनको पदपंकज थारो ॥
आय खडे अघनाशनिके कमलादिक लै मुख ओर निहारो ॥
प्रात रु संध्यउपासनको करि ध्यान धरैं मन आनँद भारो ॥
हे शेषाद्रि सुशेखरनाथ प्रभात सदा शुभ होय तुम्हारो ॥ ४ ॥

कवित्त—शंकारसहस ब्रह्मदेवरु षडानन हजारचख देवनसों ठाढे तव द्वार हैं॥दशावतार तव वामन परशुधर आदिक चरित भनि पावत न पार हैं ॥ दिन शुद्धि देवन अचारज कहत यह जयति२ नाथ गुण अगम अपार हैं ॥ शेषाद्र्यचलाधीश होय सुप्रभात तव ठाढें दीन दास यह करत पुकार हैं ॥ ५ ॥

सवैया—फूल खिले कमलादिकके नवपल्लव गाछ अनेकन वारो ॥
लौंग सुपारिन आदि फरे अति सुंदर दिव्य सरूप निहारो ॥
मंदसुगंध सुवायु वहै ऋषिराज विलोकि हृदै निज हारो ॥
हे शेषाद्रि सुशेखरनाथ प्रभात सदा शुभ होय तुम्हारो ॥ ६ ॥
वास सुहावन है जिनको पिंजरा शुचिसुंदरके शुकसारो ॥
पात्र बचा कदलीफल भक्षत आनँद नैनन खोलि निहारो ॥
मोदित ह्वै जलपान करैं अरु बोलत बोल सुहावन वारो ॥
हे शेषाद्रि सुशेखरनाथ प्रभात सदा शुभ होय तुम्हारो ॥७॥
देखि समीप सरोवर सुंदर नीरज फूलि रह्यो अति प्यारो ॥
पंक्ति अनेकन भृंग फिरैं मकरंद्रससों मन है मतवारो ॥
क्रीडत शब्द गुंजार करैं लखि गायनके स्वर मोहन हारो ॥
हे शेषाचलनाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥८ ॥
हे वरदानि अभीष्ट कृपाल सबै जग आरत बंधु पुकारो ॥
जगत अनन्य दयालुस्वरूप सदा कमलापति दास उबारो ॥
दिव्य स्वरूपके धारणहार सुमंदिरमें अति आनँद वारो ॥
श्रीगिरिवेंकटनाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ ९ ॥
श्रीशेषाद्रि महारमणीक विराजि रह्यो गरुडाचल भारो ॥
वेंकटआदि कहौं वृषभाद्रि वृषादि प्रभृति सुवेश निहारो ॥
ये शुचिनाथके वास पुरान महर्षिन वंदि सुनाम उचारो ॥
हे गिरिवेंकटनाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ १० ॥
पुष्करणी जलसों करि मज्जन अंग पवित्र सदैव सुढारो ॥
ब्रह्म सदा सनकादिक शंकर शंकर हार सदा तनुधारो ॥
ते ऋषि सुंदर नेत्र अघात करे शिर ठाढ पुकारत द्वारो ॥
हे गिरिवेंकटनाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ ११ ॥

शंकर इंद्र बली यम पावक धर्मस्वरूप सुहावन वारो ॥
हैं जल ईश धनाधिप राजित रूप मनोज प्रभंजनि धारो ॥
शोभित शीश बधांजलिसों नित लागि रहे प्रभु सेवन द्वारो ॥
हे गिरिवेंकटनाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ १२ ॥
सूरज चंद्र रु मंगलहू बुध देव गुरु गुणमंदिर भारो ॥
शुक्र शनीश्वर राहु सुकेतु सुदेव सभाके प्रधान निहारो ॥
ये सगरे तव अंतिम दास सदा शरणागत बैन उचारो ॥
हे गिरिवेंकटनाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ १३ ॥
मुक्ति पदारथ पाय भले अरु स्वर्गसु वास लहो जिन भारो ॥
तेउ सुवास विलोकि सुहावन धारण मानुष देह विचारो ॥
आस यही तनु मानुषमें नितही दरसैं पदपंकज थारो ॥
श्रीगिरिवेंकटनाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ १४ ॥
श्री अरु भूमिके नायक रूप सुअमृत सिंधुको धारणहारो ॥
हो जगरक्षणरूप अनन्य दयानिधि देवन देव निहारो ॥
पूजत हैं पदपंकजको गरुडादि अनंत सदा चित धारो ॥
श्रीगिरिवेंकटनाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ १५ ॥
नाभिमें पद्मके धारणहार सदा पुरुषोत्तम रूप सुधारो ॥
श्रीपति हौ वैकुंठके नायक चक्र सुदर्शन धारण हारो ॥
हौ शरणागतके प्रतिपाल जनार्दन श्रीवत्स चिह्नवारो ॥
श्रीगिरिवेंकटनाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ १६ ॥
सुंदर मूरतिमान स्वरूप रु कामहुको मद तोरनवारो ॥
दृष्टि समर्पणके कर्ता लक्ष्मीकुच सो जलजारुणहारो ॥
कीरति दिव्य सबै गुणमंदिर हौ करुणानिधि दीन उबारो ॥
श्रीगिरिवेंकटनाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ १७ ॥

कच्छप मच्छ वराहस्वरूप धर्‌यो नरसिंह महाविकरारो ॥
वामन ह्वै भृगुनाथ स्वरूप तपी तनु राम अनेकन तारो ॥
श्रीव्रजराज धर्‌यो बलसों कल्की अब होहु पुराण पुकारो ॥
श्रीगिरिवेंकटनाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ १८ ॥
आज शिरोमणि वैदिकके हिय हर्षि महर्षिन प्रेम सुधारो ॥
लौंग कपूर इलायचि आदि सुगंध संयुक्त सुवर्ण सुथारो ॥
व्योम सरोवरसों परिपूरित कंचनके घट दिव्य निहारो ॥
प्राशनके तहँ वासत वेंकटनाथ प्रभात सुहोय तुम्हारो ॥ १९ ॥
सूरज राजत भे उदयाचल भृंगन मोहन राग उचारो ॥
देखि प्रफुल्लित कंज चहूंदिशि गुंजि रहे मन है मतवारो ॥
वैष्णव प्रार्थित होत सबै तब लोक अनन्दित जात निहारो ॥
श्रीगिरिवेंकटनाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ २० ॥
शंकर इंद्र महर्षि सनंदन आदिक ब्रह्म हिये मुद धारो ॥
मंगल वस्तु धरे करमें अरु जोगिनके शिरताज निहारो ॥
आय खडे ढिग मंदिरके विनती करि बारहिवार पुकारो ॥
श्रीगिरिवेंकटनाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ २१ ॥

दोहा—कौशल्यासुत श्रेष्ठ नर, हे रघुपति रघुराज ॥
उठहु प्रात संध्यासमें, देवार्चनके काज ॥ २२ ॥
हे भगवन् शेषाद्रिप्रभु, वीणा मधुर बजाय ॥
ऋषि नारद तव विमलयश, रहे मगन मन गाय ॥२३॥

नारि अनेक अहीरनकी मथिवे दधिकाज समय अनुहारो ॥
शब्द गंभीर उठे अतिही दिशि औ विदिशान रह्यो भरि भारो ॥
ता उपमा इमि सोहि रही जनु कुंभदिशा कलहादिक पारो ॥
हे शेषाधिप नाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ २४ ॥

मित्र महादिननायकके सत्पत्र स्वरूप तनय जल वारो ॥
स्थित भृंग रहे तिनकी लक्ष्मी हरनो मनमांहिं विचारो ॥
सुत्तरु रक्तस्वरूप फिरैं जनु भोरि सुशब्द फिरै मतवारो ॥
हे शेषाधिप नाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ २५ ॥
गोष्ठिनमें तुम्हरी हरिजी गजराज हयादि सुराज निहारो ॥
पक्षिन राज नगाधिपहू अपनी २महिमाहुँ सँभारो ॥
पूजि रहे मन आनँदसो शुचि सुंदर मंगलवैन उचारो ॥
हे शेषाधिपनाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ २६ ॥
शीर्ष भये जिनके परिपूरित तो चरणाम्बुजकी रज धारो ॥
स्वर्ग रु मोक्षहुँको तजिके सुख आनँदसों तव नेह निहारो ॥
वेद अरु शास्त्रनमें विहरैं तव कीरतिमें मन आनँद भारो ॥
हे शेषाधिप नाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ २७ ॥
श्रेष्ठ गुणागर श्रीकमलापति जो भवसिंधु अगाध न पारो ॥
ता तरिवे हित सेतु सदा हरि भक्तन सेवित नाम अधारो ॥
हौं ऐश्वर्य स्वरूप महा तनु वेद रु शास्त्रसु जाननहारो ॥
श्रीगिरिवेंकटनाथ हरे सुप्रभात सदा यह होय तुम्हारो ॥ २८ ॥
हे जगदीश वृषाचलस्वामिन् उक्त सुरीति हिये जिन धारो ॥
पाठ प्रभात करैं तुम्हरो शुभ है नितहीं मनमोदित भारो ॥
जे सुमिरैं तिन भक्तनको शुचि ज्ञान बढै तिनको सुख सारो ॥
होय सुबुद्धि सुमुक्तिहुको पथ गायनको गुण गावनहारो ॥ २९ ॥

कुण्डलिया ।

कृष्णपक्ष कार्तिक सुभग दीपमालिका जानि ॥
पूजत लक्ष्मीमात जग कार्यसिद्धि अनुमानि ॥
कार्यसिद्धिअनुमानि सिद्धि नवनिद्धिकि दाता ॥
हेरो कृपाकटाक्ष प्रेम निशिदिन बसि माता ॥

कहइ जन रामप्रसाद विनै जनकी लखि लीजै ॥
वर्षत कंचन नीर वर्ष पूरणकर दीजै ॥

इति श्रीवेंकटेशसुप्रभातं समाप्तम् ।

श्रीवेंकटेशाष्टक ।

सवैया--ग्राह गह्यो गहिरे जलमें गज आरत ह्वै तुमसों चित लायो॥
तोरत पुष्प न देर कियो अति आरत शब्द सुन्यों उठि धायो ॥
ग्राह पछारि कियो जल बाहर बारन बार न बार लगायो ॥
रामप्रसादकि त्रास विनाशक वेंकटनाथ स्वरूप सुहायो ॥
इंद्र लखो जबहीं गिरि पूजत मेघन बोलि तुरंत पठायो ॥
मूसलधार परै जलजोर भयानक शब्द घटा घहरायो ॥
देखि डरे व्रजलोग सबै तिन रक्षन हेत पहाड उठायो ॥
रामप्रसादकि त्रास विनाशक वेंकटनाथ स्वरूप सुहायो ॥
त्रास दियो हरणाकुशने प्रह्लाद सियापतिसों चित लायो ॥
नासन हेत उपाय रच्यो बहु ताति समीर लगे नाहिं पायो ॥
खंभसो फोरि कढे नर नाहर ता अरिको यमधाम पठायो ॥
रामप्रसादकि त्रास विनाशक वेंकटनाथ स्वरूप सुहायो ॥
लोकहु वेदविरुद्ध जो भामिनि सो शबरी हितसों गुण गायो ॥
ताहि कियो जगमें अतिपावन भांति अनेकन भक्ति सिखायो ॥
चीखिधरे फल जो हितसों करुणानिधि सो रुचिसों फल खायो ॥
रामप्रसादकि त्रास विनाशक वेंकटनाथ स्वरूप सुहायो ॥
कंसने कोप कियो व्रजपै व्रजवासिन हेतु दवारि पठायो ॥
देखि सबै व्रजको यमुनातट जारन हेत चहुँदिशि धायो ॥
हाल विहाल लखो सबको व्रजवासिन हेत अँगार चवायो ॥
रामप्रसादकि त्रास विनाशक वेंकटनाथ स्वरूप सुहायो ॥

विप्र अजामिल पाप स्वरूप सदा करि पापहि जन्म गवायो ॥
डारिकै फांस चले जबहीं यम अंतसमै सुतको गोहरायो ॥
नामनारायण भाषतहीं यमफांस छुडाय विमान चढायो ॥
रामप्रसादकि त्रास विनाशक वेंकटनाथ स्वरूप सुहायो ॥
चीर उतारन हेतु दुशासन पांडव नारि सभा गहि लायो ॥
आस तजी सब राजनकी लखि दीनदयाल तुम्हैं गोहरायो ॥
ताहि कियो चखपूतरिसो अरु नेकहु अंग खुलै नहिं पायो ॥
रामप्रसादकि त्रास विनाशक वेंकटनाथ स्वरूप सुहायो ॥
पापिनि सापिनि जो जगमें गणिका हितसे कब ध्यान लगायो ॥
ताहि दियो निज धाम कृपानिधि कीर पढावतही गति पायो ॥
बानि गरीब नेवाजकि राखहु पापिन तारत बारन लायो ॥
रामप्रसादकि त्रास विनाशक वेङ्कटनाथ स्वरूप सुहायो ॥

कवित्त–आई है दिवारी मास कातिककि भारी दीप जो नरनारी आस करत गणेशकी ॥ मिटी अँधियारी नये खातेकी तयारी धरि प्रतिमा अगारी पूजैं रमा औ रमेशकी ॥ शोभा अधिकारी एक ठौर करि धारी कहै रामको प्रसाद सब देश और विदेशकी॥ जैसी उजियारी सब जगकी निहारी तासों सौगुनि उज्यारी लक्ष्मिवेंकटेश प्रेसकी ॥

कवित्त–मीन रूप धरि प्रभु वेदन उद्धार कीन्हो सत्यव्रत भूपतिको दरश देखायके॥ कच्छपस्वरूप गिरिमंदरको रोंकि पीठि देवन उबारो रूप मोहनी बनायके ॥ धारिकै वराहरूप धरणिनाथ कियो रामको प्रसाद कहै विनति सुनायके ॥ गंगाविष्णु प्रीतिकी प्रतीतको विलोकि लक्ष्मिवेंकटेश प्रेसमें विराज्यो नाथ आयके ॥१॥

इति श्रीवेंकटेशाष्टकं समाप्तम् ।